PRIVATE CIRCULATION ONLY

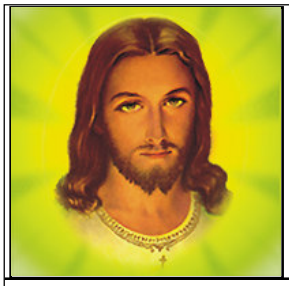

दिव्य ज्योति

दिसम्बर 2006 ISSUE 1206 ''मैं संसार की ज्योति हूँ'' न्यूज़ लैटर

प्रभु येशु हैं ईश्वर के शाश्वत शब्द, संसार की ज्योति

"आदि में शब्द था, शब्द ईश्वर के साथ था और शब्द ईश्वर था। वह आदि में ईश्वर के साथ था। उसके द्वारा सब कुछ उत्पन्न हुआ और उसके बिना कुछ भी उत्पन्न नहीं हुआ। उसमें जीवन था, और वह जीवन मनुष्यों की ज्योति था। वह ज्योति अंधकार में चमकती रहती है-अंधकार ने उसे नहीं बुझाया। ...शब्द वह सच्ची ज्योति था, जो प्रत्येक मनुष्य का अंधकार दूर करती है।" (योहन 1:1-5,9) वह शाश्वत शब्द और ज्योति और कोई नहीं, पर प्रभु येशु, ईश्वर के इकलौते पुत्र, हैं जिन्होंने हम पापी मनुष्यों के उद्धार करने व बचाने हेतु तथा अपने पिता की इच्छा को पूरी करने के लिए इस धरती पर मानव अवतार लिया। उनके जन्म होने पर यह घटना घटी– ***"ज्योतिषी पूर्व से येरुशालेम आये और यह बोले, "यहूदियों के नवजात राजा कहाँ हैं? हमने उनका तारा उदित होते देखा। हम उन्हें दण्डवत् करने आये हैं। ... वह तारा उनके आगे-आगे चलता रहा, और जहाँ बालक (प्रभु येशु) था, उस जगह के ऊपर पहुँचने पर ठहर गया। वह तारा देख कर बहुत आनन्दित हुए।" (मत्ती 2:2, 9-10)***

प्रभु हमारे बीच रहे। देखने पर इस धरती पर उनका जीवन केवल33 वर्ष का रहा पर इतने वर्षों में उन्होंने जितने कार्य (अद्‌भुत चमत्कार, चिन्ह, शिक्षा, चंगाईयाँ, प्रार्थना इत्यादि) किये, ***यदि एक-एक कर उनका वर्णन किया जाता, तो मैं समझता हूँ कि जो पुस्तकें लिखी जातीं, वे संसार भर में भी नहीं समा पातीं। (योहन 21:25)*** *ईश्वर के पुत्र होने पर भी, संसार के अधिपति होने पर भी, उन्होंने गरीबों के बीच जन्म लिया और गरीबी में ही जीवन बिताया। पर वह हमारे कारण निर्धन बन गये, जिससे वह हमें अपनी निर्धनता द्वारा सम्पन्न व धनी बना दे।* ***(1कुरिन्थियों8:9)***

(शेष भाग पृष्ठ 2 पर)

सब नारियों में धन्य प्रभु की माँ, हम बच्चों के लिए याचना कर

स्वर्गदूत ने उन से कहा, "मरियम! डरिए नहीं। आप को ईश्वर की कृपा प्राप्त है। देखिए, आप गर्भवती होंगी, पुत्र प्रसव करेंगी और उनका नाम येशु रखेंगी। वे महान् होंगे और सर्वोच्च प्रभु के पुत्र कहलायेंगे। प्रभु–ईश्वर उन्हें उनके पिता दाऊद का सिंहासन प्रदान करेगा.."(लूकस1:30-32)

ईश्वर की इच्छा से उसके शब्द ने दूत के संदेश द्वारा धन्य कुँवारी मरियम के गर्भ में मानव शरीर धारण किया। हे माँ मरियम, तुझे प्रणाम, जिन्होंने उस अधीश्वर को, निज सृष्टिकर्ता को, शान्ति के राजा को जन्म दिया जो सारी सृष्टि में भी समा नहीं सकते थे। तुझे ही माता का उल्लास तथा कुँवारपन का गौरव दोनों प्राप्त है। ईश्वर ने आपको इस भाँति महिमान्वित किया है कि मानव जिह्वा सदा–सर्वदा आपका कीर्ति–गान करती रहे। हे अति पवित्र माँ, ख्रीस्तानों की सहायक, हम निर्बल व पीड़ित बच्चों की मदद कर, हमें सब हानि एवं बुराई से बचा। हमें आशीष दे और हमारे परिवार का संरक्षण कर। हमारी प्रार्थनाँए अपने पुत्र

"एक कुँवारी गर्भवती होगी और पुत्र प्रसव करेगी, और उसका नाम एम्मानुएल रखा जायेगा।" (सन्त मत्ती1:23)

तक पहुँचा दे। हे ईश्वर की विनम्र एवं आज्ञाकारी दासी, हम पर ऐसी कृपा कर कि हम तेरे समान प्रभु की इच्छा जानने को उत्सुक रहें और खुशी से उसे पूरा कर लें, यह प्रार्थना हम करते हैं हमारे प्रभु ख्रीस्त के द्वारा। आमेन।

(पृष्ठ 1 का शेष भाग)★

प्रभु येशु ने यह कहा **"संसार की ज्योति मैं हूँ। जो मेरा अनुसरण करता है, वह अन्धकार में भटकता नहीं रहेगा। उसे जीवन की ज्योति प्राप्त होगी।"** अपने इस धरती का जीवन समाप्त करने से पहले उन्होंने फिर यह कहा था, **"जब तक ज्योति (अर्थात् स्वंय येशु) तुम्हारे पास है, आगे बढ़ते रहो। कहीं ऐसा न हो कि अन्धकार तुमको घेर ले। जो अन्धकार में चलता है, वह नहीं जानता कि वह कहाँ जा रहा है। जब तक ज्योति तुम्हारे पास है, ज्योति में विश्वास करो, जिससे तुम ज्योति की सन्तति बन जाओ।"(सन्त योहन 8:12; 12:35-36)**

पवित्र बाइबिल कहती है, **"जितनों ने उसे अपनाया, और जो उसके नाम में विश्वास करते हैं, उन सबों को उसने ईश्वर की सन्तति बनने का अधिकार दिया।" (सन्त योहन 1:12)**

सचमुच, प्रभु येशु हमारे लिए ज्योति बन कर आए, शाश्वत और जीवन्त वचन बन कर आए और अपने प्रकाश द्वारा इस संसार के अन्धकार को उन्होंने मिटा दिया, सम्पूर्ण मानव जाति को पापमुक्त किया– अपने जीवन द्वारा और क्रूस पर अपने बहुमूल्य जीवन के बलिदान द्वारा जो उन्होंने हमारे लिए, सारे संसार के लिए दिया और हमें इसके द्वारा अनन्त जीवन का मार्ग दिखाया। 25 दिसम्बर को (बड़ा दिन) हम इस दिव्य–ज्योति का जन्मदिन बड़ी धूम–धाम से मनाते हैं।

पर इस दिव्य–ज्योति को संपूर्ण रुप से क्या हम स्वीकार कर रहे हैं ? क्या यह ज्योति हमारे हृदय में जन्म ले चुकी है या अब जन्म ले लेगी ? क्या हम बाह्य रुप से ही उसका स्वागत करते हैं या हम आन्तरिक रुप से भी उसका स्वागत करते, उस पर विश्वास करते और उसके प्रकाश का अनुभव कर स्वयं प्रकाश में चलते हैं ? इन सभी प्रश्नों को हम अपने हृदय से पूछें और स्वंय जाँच कर देख लें। हम स्वंय को धोखा न दें और न ही हम धोखे में रहें। प्रभु येशु ही इस संसार की ज्योति हैं। और यदि हम उस पर विश्वास न रखें, उसे न स्वीकारें, तो पवित्र बाइबिल इस विषय में यह बताती है–

"जो पुत्र (परमेश्वर के इकलौते पुत्र प्रभु येशु) में विश्वास करता है, वह दोषी नहीं ठहराया जाता है। जो विश्वास नहीं करता, वह दोषी ठहराया जा चुका है, क्योंकि वह ईश्वर के एकलौते पुत्र के नाम में विश्वास नहीं करता। दण्डाज्ञा का कारण यह है कि ज्योति संसार में आई है और मनुष्यों ने ज्योति की अपेक्षा अन्धकार को अधिक पसन्द किया, क्योंकि उनके कर्म बुरे थे। जो बुराई करता है, वह ज्योति से बैर करता है और ज्योति के पास इसलिए नहीं आता कि कहीं उसके कर्म प्रकट न हो जायें। किन्तु जो सत्य पर चलता है, वह ज्योति के पास आता है, जिससे यह प्रकट हो कि उसके कर्म ईश्वर की प्रेरणा से हुए हैं।"(योहन 3:18-21)

प्रभु येशु ने कहा "यदि तुम विश्वास नहीं करते कि मैं वही हूँ, तो तुम पाप की स्थिति में मर जाओगे।"(योहन 8:24) और यह भी कि **"मैं ज्योति बन कर संसार में आया हूँ, जिससे जो मुझ में विश्वास करता है, वह अन्धकार में नहीं रहे।(योहन12:46)**

इसलिए हम प्रभु येशु पर विश्वास करें, उनकी शिक्षाओं और वचनों पर चलें और स्वर्गराज्य में पहुँच कर अनन्त जीवन प्राप्त करें। इस क्रिसमस के अवसर पर प्रभु अन्धकारमयी शक्तियों, बुरे कर्मों, पैशाचिक बन्धनों और प्रलोभनों से बचने के लिए और हर परीक्षा में विजय प्राप्त करने के लिए हमें सावधान करते हैं और इन सबसे भविष्य में सर्तक रहने के लिए भी हमें परामर्श देते हैं। यह प्रार्थना, विश्वास, पुण्य कर्मों और ईश वचन के अनुसरण द्वारा ही संभव है जिसके द्वारा हम ज्योति में चलते रहेंगे, हमारी ज्योति मनुष्यों के सामने चमकती रहेगी **(मत्ती5:14-16)** क्योंकि प्रभु स्वंय हमारे संग रहेंगे और हमें ज्योर्तिमय बना देंगे।

क्रिसमस के शुभ अवसर पर हम नन्हें येशु का स्वागत अपने हृदय में करें, उसके लिए हम अपना हृदय शुद्ध रखें ताकि वह हमारे हृदय में जन्म ले और सदा हमारे साथ रहें; हमें आशीष दें, हमें ज्योर्तिमय बना दें और हमें कृपाओं और वरदानों से भरें। हम अपने तौर –तरीके, आदतें और कर्म बदल लें जो हमारे विचारों के बदलने से ही बदल पायेंगे और ईश्वर की हमारे प्रति इच्छा को खोजकर हम उसके अनुसार चलें। उस पवित्र ज्योति, पवित्र आत्मा की इच्छा कर उसे विश्वास के साथ प्रार्थना में प्रभु से माँगें और प्राप्त करें **(लूकस 11:9-13)**। यह क्रिसमस हमारे जीवन को बदल दे, हमें ईश्वर की, ज्योति की, सन्तति बना दे और हमें ईश्वर की अनन्त शान्ति, प्रेम और खुशी से भरपूर करे – यह प्रार्थना हम करते हैं अपने प्रभु ख्रीस्त के द्वारा। आमेन।

मेरा मन अपने मुक्तिदाता ईश्वर में आनन्द मनाता है!

माँ मरियम जब अपने कुटुम्बिनी एलीज़बेथ से मिली, जो छह महीने से गर्भवती थी, तो उनके अभिवादन से एलीज़बेथ पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गई और बच्चा उनके गर्भ में आनन्द के मारे उछल पड़ा। तब एलीज़बेथ ने मरियम को नारियों में धन्य कहा और उस आनन्द के आवेश में माँ मरियम ने भजन गाया, "

मेरी आत्मा प्रभु का गुणगान करती है, मेरा मन अपने मुक्तिदाता ईश्वर में आनन्द मनाता है, क्योंकि उसने अपनी दीन दासी पर कृपादृष्टि की है। अब से सब पीढ़ियाँ मुझे धन्य कहेंगी, क्योंकि सर्वशक्तिमान् ईश्वर ने मेरे लिए महान् कार्य किये हैं। पवित्र है उसका नाम! उसकी कृपा उसके श्रद्धालु भक्तों पर पीढ़ी-दर-पीढ़ी बनी रहती है। उसने अपना बाहुबल प्रदर्शित किया है, उसने घमण्डियों को तितर-बितर कर दिया है। उसने शक्तिशालियों को उनके आसनों से गिरा दिया है और दीनों को महान् बना दिया है। उसने दरिद्रों को सम्पन्न किया और धनियों को खाली हाथ लौटा दिया है। इब्राहीम और उनके वंश के प्रति अपनी चिरस्थायी दया को स्मरण कर, उसने हमारे पूर्वजों के प्रति अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार अपने दास इस्राएल की सुध ली है।" (लूकस 1:39-55)

सच में पिता परमेश्वर ने प्रेम के कारण अपने इकलौता पुत्र को माँ मरियम द्वारा इस धरती पर भेजकर अपने सत्यप्रतिज्ञता प्रदर्शित की और इस्राएल के लोगों की, अपनी प्रजा की, सुध ली थी, जो कई शताब्दियों से एक मुक्तिदाता की राह देख रहा था। प्रभु ने जिस प्रजा को चुना था, उसने कई बार प्रभु–ईश्वर के विरूद्ध विद्रोह किया था और कई बार प्रभु को छोड़ अन्य देवताओं की पूजा करके प्रभु को चुनौती दी, उनके क्रोध को भड़काया और उनकी अपार दया की परीक्षा ली। उन्हें समझाने के लिए तथा उन्हें उनकी पाप का बोध कराने के लिए प्रभु ने अनेक नबियों को अपनी प्रजा के बीच भेजा। पर फिर भी वह प्रभु के करीब न आये और अपने पापों में ही फँसे रहे। इसलिए उनके उद्धार के लिए,

"घर में प्रवेश कर उन्होंने बालक को उसकी माता मरियम के साथ देखा और उसे साष्टांग प्रणाम किया। फिर अपना-अपना संदूक खोलकर उन्होंने उसेसोना, लोबान और गन्धरसकी भेंट चढ़ायी। (सन्त मत्ती2:11)

पाप की दासता से उन्हें मुक्त कराने के लिए, उनका स्वंय से मेल कराने के लिए उन्हें अपने पुत्र को भेजना पड़ा, प्रतिज्ञात मसीहा को भेजना पड़ा जो उनके लिए अपने जीवन की आहुति देगा और फिर पिता द्वारा महिमान्वित किया जायेगा। परमेश्वर अपनी प्रजा को खो देना नहीं चाहता था क्योंकि उनके लिए प्रत्येक आत्मा बहुमूल्य है। प्रत्येक मनुष्य, सृष्टि का मुकुट, उसकी नज़रों के सामने हरदम रहता और वह स्वर्ग से उन सब के कर्मों को देखता, उनकी बातों पर कान लगाता और विनम्रों की प्रार्थनाओं को जल्द ही सुनता है। उसने एक निष्कलंक कुँवारी को प्रभु येशु की माँ बनने के लिए चुना और उसे सब नारियों में धन्य बना दिया। यह निश्चय ही बड़े आनन्द का विषय था, केवल माँ मरियम के लिए ही नहीं, एलीज़बेथ के लिए ही नहीं, पर पूरे इस्राएल के लिए। प्रभु ने आपको चुना है, उसे जानने के लिए, उसकी महिमा देखने के लिए, उसकी शान्ति, प्रेम व आनन्द को अनुभव करने के लिए। इसलिए कभी उदास, निराश, व्याकुल या भयभीत न हो, पर आनन्द मनाओ, उसके दिये वरदानों के प्रति उसे धन्यवाद देते रहो, उसकी स्तुति–आराधना करते रहो, मधुर भजन व स्तोत्र गाओ और उसमें लीन हो जाओ। इस अशान्त, व्याकुल, भयभीत संसार से दिल न लगाओ, जो कभी आपको शान्ति व सन्तुष्टि नहीं दे सकती।

पवित्र बाइबिल कहती है, "उदासी के शिकार मत बनो और चिन्ता से अपने को तंग मत करो। हृदय की प्रसन्नता मनुष्य में जीवन का संचार करती और उसे लम्बी आयु प्रदान करती है। अपना मन बहलाओ अपने हृदय को सान्तवना दो और उदासी को अपने से दूर करो। उदासी ने बहुतों का विनाश किया है और उससे कोई लाभ नहीं। ईर्ष्या और क्रोध जीवन के दिन घटाते हैं और चिन्ता समय से पहले किसी को बूढ़ा बनाती है। आनन्दमय हृदय खाने की रुचि बढ़ाता है, ऐसा व्यक्ति अपने भोजन का बहुत ध्यान रखता है।" **(प्रवक्ता ग्रन्थ 30:22-27)**

पिता परमेश्वर हमें प्यार करता है और हमारा ख्याल अपने बच्चों के समान रखता है। प्रभु येशु ने भी यह कहा, "जिस प्रकार पिता ने मुझ को प्यार किया उसकी प्रकार मैंने भी तुम लोगों को प्यार किया है। यदि तुम मेरी आज्ञाओं का पालन करोगे, तो मेरे प्रेम में दृढ़ रहोगे। मैंने तुम लोगों से यहइसलिए कहा है कि तुम मेरे आनन्द के भागी बनो और तुम्हारा आनन्द परिपूर्ण हो।" **(योहन 15:9-11)** अपने आनन्द को ईश्वर में परिपूर्ण बनाना है, उसकी आत्मा को प्राप्त कर लेने के बाद हमारे अन्दर आनन्द ही आनन्द होगा जिसे कोई हमसे छीन नहीं सकेगा। हम प्रभु में विलीन होंगे और वो हमारे साथ हर पल रहेगा। इस आनन्द को आप भी प्राप्त कर लें। प्रभु येशु पर पूर्ण विश्वास कर उनसे प्रार्थना करें और ईश्वर की पवित्र आत्मा का वरदान माँगें। प्रभु कहते हैं, "माँगो, और तुम्हें दिया जायेगा; ढूँढ़ो और तुम्हें मिल जायेगा; खटखटाओ और तुम्हारे लिए खोला जायेगा।" **(सन्त लूकस 11:9-10)**और यह भी कि "माँगो (प्रभु येशु के नाम पर) और तुम्हें मिल जायेगा] जिससे तुम्हारा आनन्द परिपूर्ण हो।" **(सन्त योहन 16:24)**

★ बाईबिल प्रतियोगिता ★

6) लूकस रचित सुसमाचार
g) अध्याय 21-24

प्रस्तुतवाक्यांश **सन्त लूकस**के सुसमाचार के अध्याय **21 से 24** तक से लिये गये हैं। अब आप**सन्त लूकस**के सुसमाचार में से प्रभु येशु के **दुःखभोग, मृत्यु व पुनरुत्थान** के विषय में पढ़कर इन रिक्त स्थानों को भरें तथा इनके अध्याय व वाक्यांश की संख्या बतायें। साथ ही यह भी बतायें कि इन वाक्यों को किसने कहा था?

1) "_____ में रहने वालों में____ ही एक ऐसे हैं, जो यह नहीं जानते कि _____ इन दिनों क्या–क्या हुआ।"

2) "_____! यह कब होगा और किस ऋऋऋ से पता चलेगा कि _____पूरा होने को है?"

3) "_____ में राजा अपनी_____ पर निरंकुश _____करते हैं और _____ संरक्षक कहलाना चाहते हैं।"

4) "_____ ले जाइए! हमारे लिए_____ को रिहा कीजिए।"

5) "क्या _____ _____का भी डर नहीं! _____ भी तो वही _____ भोग रहा है।"

6) "आप_____ जीवित को_____ में क्यों_____ हैं?

7) "_____ और गवाही की_____ही क्या है?_____ तो स्वंय इसके_____से सुन लिया है।"

8) "_____! मैं_____ साथ_____ जाने और_____ को भी तैयार हूँ।"

पिछली प्रतियोगिता के सही उत्तर

6) लूकसरचित सुसमाचार
f) अध्याय 18-20

1) क) और ग) (20:34-36)
2) क),ख),ग) और घ)(19:2-10)
3) क) और ग)(18:1-8)
4) क), ख) और ग) (20:1-2, 20-21, 27-33, 41-44)
5) घ) (20:9-19)
6) ख) और घ) (20:46-47)
7) क) (18:9-14)
8) ख) और घ)(18:31-33)

प्रतियोगिता के नियम

क) प्रतियोगिता के उत्तर अगले महीने के20 तारीख तक हमारे पास पहुँच जाने चाहिएँ। उत्तर एक पोस्ट कार्ड या चिट्ठी में इस पते पर लिख भेजिए – **जीवन-धाम, मकान नं० 696, सैक्टर-22, फरीदाबाद-121005, हरियाणा।**
ख) अपना नाम व पता स्पष्ट शब्दों में लिखिए। प्रतियोगिता की संख्या एवं शीर्षक लिखना ज़रुरी है। सभी उत्तर(प्रश्न संख्या सहित) क्रमानुसार होने चाहिएँ।
ग) इनाम सिर्फ उन प्रतियोगियों को मिलेगा जो लगातार तीन प्रतियोगिताओं के सही–सही उत्तर समय पर देंगे।
घ) प्रतियोगिता के सही उत्तर अगले माह के प्रकाशन में बताये जायेंगे।
ङ) सहीं उत्तरों से मिलाने के लिए अपने उत्तरों की एक प्रति अपने पास भी रखें।

'जीवन-धाम' के जीवित साक्ष्य

ईश वचन की शक्ति द्वारा सफेद दाग की बीमारी से मुक्ति मिली

येशु की स्तुति हो! येशु को धन्यवाद!
मैं, मन्जू(उम्र–**12** वर्ष), करीब **4** वर्ष से सफेद दाग से पीडित थी। सबसे पहले मेरी

क्रिसमस की हार्दिक शुभकामनायें

"वह दाऊद के सिंहासन पर विराजमान हो कर सदा के लिए शान्ति, न्याय और धार्मिकता का साम्राज्य स्थापित करेगा। विश्वमण्डल के प्रभु का अनन्य प्रेम यह कार्य सम्पन्न करेगा। (इसायाह9:6)

Season's Greetings
Merry Christmas

शादी के कई वर्षों बाद इन निस्सन्तान दम्पत्तियों को सन्तान का दान मिला

आँखों के ऊपर सफेद दाग आ गये। बाद में उनका आकार बढ़ गया और दाग पूरे शरीर में फैलते गये। इलाज के लिए कई डॉक्टरों के पास गये और उन्होंने यह आश्वासन दिया कि थोड़े दिनों में ही दाग खत्म हो जायेंगे। पर कोई फायदा नहीं हुआ। 3 वर्ष तक इलाज में कम से कम बीस हज़ार रुपये तक लगा दिये और फिर इलाज बन्द ही कर दिया। 8 महीने पहले से मैं "जीवन–धाम" के इस प्रार्थना सभा के आने लगी। यहाँ से मैं आशीष किया हुआ तेल और मिट्टी ले जाती थी और सोने से पहले पूरे शरीर पर लगा लेती थी। पिछले 3 महीने से सफेद दाग धीरे–धीरे खत्म होने लगे। अब सिर्फ कुछ निशान पैरों पर व गर्दन पर रह गये हैं। प्रभु येशु को लाखों–लाखों बार धन्यवाद।

प्रभु की कृपा से इन दोनों बच्चों की पेट की रसौली बिना ऑपरेशन के ही गायब हो गई!

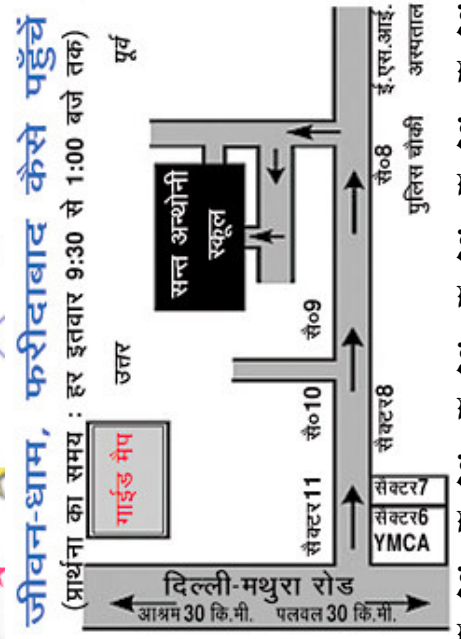

"अपने न्याय के अनुरुप तू अपने चमत्कारों द्वारा हमारी प्रार्थना का उत्तर देता है।" (स्तोत्र 65:6)

"जीवन-धाम" की ओर से सभी को बड़े दिन की मंगलकामनाएँ!

जीवन-धाम, फरीदाबाद कैसे पहुँचें

(प्रार्थना का समय : हर इतवार 9:30 से 1:00 बजे तक)

(Our website address)
www.jeevandham.org
E-mail : justcallanthony@yahoo.com

क्या आप चिन्तित...........हैं?
क्या आप दुःखी...........हैं?
क्या आप रोगी...........हैं?
क्या आप के मन में अशान्ति...........है?

आपको सांत्वना देने के लिए एक जगह है। वह है 'जीवन-धाम'। आप सन्त अन्तोनी स्कूल, सैक्टर-9 फरीदाबाद में हर रविवार प्रातः 9.00 बजे से 12.30 बजे तक 'जीवन-धाम' 696/22, फरीदाबाद द्वारा आयोजित प्रार्थना सभा में भाग लेकर यीशु के अनुग्रहों को प्राप्त कर सकते हैं।

स्वर्गदूत ने मरियम से कहा, "पवित्र आत्मा आप पर उतरेगा और सर्वोच्च प्रभु की शक्ति की छाया आप पर पडेगी। इसलिए जो आप से उत्पन्न होंगे, वे पवित्र होंगे और ईश्वर के पुत्र कहलायेंगे।" (सन्त लूकस 1:35-36)

Merry Christmas

Edited & Published by JEEVAN DHAM, Faridabad   Printed at Sabina Printing Press, 387/24, Faridabad, Haryana.